विचार बिन्दु

समय सबसे बड़ा चिकित्सक है, वक्त हर घाव का मरहम है। –कहावत

आयुर्वेद पर अतिथि-सम्पादकीय के 100 सप्ताह

आयुर्वेद पर अतिथि-सम्पादकीय के 100 सप्ताह पूरे हो रहे हैं। किसी गूढ़ और कठिन तकनीकी विषय पर अतिथि-संपादकीय की परंपरा समकालीन पत्रकारिता में एक नवाचारी प्रयोग है। ऐसे विषय केवल शोध-पत्रिकाओं या यदा-कदा मासिक पत्रिकाओं में ही प्रकाशित होते हैं। हिंदी में विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर गहन तकनीकी लेखन और पाठन की परंपरा कम है। इसके बावजूद अत्यन्त कठिन, किंतु पूर्णत: जीवनोपयोगी और जनोपयोगी आयुर्वेद पर राष्ट्रदूत का यह नवाचारी प्रयोग पत्रकारिता में साहसिक कदम है। आयुर्वेद की प्राचीन संहिताओं, आधुनिक वैज्ञानिक शोध, अनुभवजन्य ज्ञान और पत्रकारिता के समेकित बौद्धिक संगम पर किये गये इस अनूठे प्रयोग का लेखा-जोखा मेरे लिये बहुत रोचक है।

थोड़ी सी व्यक्तिगत बात की जाये तो आयुर्वेद मेरे लिये आजीविका का नहीं बल्कि जीने का साधन है। आयुर्वेद मेरे उस विश्वास का प्रतीक है जिसका मानना है कि युक्ति से उम्र बढ़ाई जा सकती है। युक्ति से स्वस्थ रहा जा सकता है। मेरे लिये आयुर्वेद एक कोरी आस्था नहीं बल्कि ठोस प्रमाण पर आधारित आयु का विज्ञान है। आयुर्वेद की संहिताओं की समझ मेरे लिये केवल वाच्यार्थ तक सीमित नहीं है। यह ठोस आधुनिक वैज्ञानिक संदर्भ में फलितार्थ को समझते हुये सत्य तक पहुँचने की व्यक्तिगत यात्रा है। आयुर्वेद मेरे लिये सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत का अद्वितीय उदाहरण भी है। मेरे लिये आयुर्वेद उस महावाक्य का जीता-जागता प्रमाण है जिसे महर्षि अग्निवेश ने सत्यो नाम यथार्थभूत:कहा है (च.वि.8.38)। असल में आयुर्वेद मेरे लिये व्यक्तिगत ऑपरेटिंग मैनुअल भी है।

इस कड़ी में जहाँ तक विषय-विविधता की बात है, व्यक्ति के रूप में हमें जीवन जीने के लिये जो ज्ञान एवं निर्देश आयुर्वेद में उपलबध हैं, उसकी पूरी समग्रता ही आयुर्वेद के आलोच्य अतिथि-सम्पादकीय का विषय रही है। परिणामस्वरूप राष्ट्रदूत में ज्ञान का बड़ा रोचक संग्रह हुआ है। दो वर्ष तक 100 सप्ताहों के दौरान अनेक महत्वपूर्ण विषयों पर लिखा गया। इन विषयों की विविधता को देखें तो सबसे पहले आयुर्वेद में स्वास्थ्य-रक्षण के विविध आयामों पर विश्लेषण हुआ है। अस्वास्थ्यकर जीवनशैली के कारण रोगोत्पत्ति एवं उनसे निपटने में वैश्विक वित्तीय बोझ का आंकलन भी हुआ। आयुर्वेद द्वारा जीवनशैली-आधारित रोगों से निपटने के लिये विविध सुझाव व उपयोगिता, उन प्रमाणों के प्रकाश में प्रस्तुत किये गये जो आधुनिक शोध और अनुभवजन्य ज्ञान प्रकाश में खरे उतरते हैं।

स्वास्थ्य-रक्षण के साथ ही उन रोगों पर विशेष विश्लेषण भी किया गया जो बायोमेडिकल चिकित्सा पद्धति को दी गई भारी प्राथमिकता एवं बजट के बावजूद विश्व को निरंतर बीमार करते जा रहे हैं। इनमें मोटापा, हृदय रोग, मानसिक रोग, कैन्सर, मधुमेह, एवं श्वसन तंत्र आदि के रोग शामिल रहे हैं। इन रोगों के सन्दर्भ में ही जीवनशैली, पंचकर्म एवं रसायन चिकित्सा आदि का प्रमाण-आधारित विश्लेषण भी किया गया। चयनित रोगों और उनसे बचने के लिये आयुर्वेद, शोध, और अनुभव से प्रमाणित सलाह का निरंतर समावेश किया गया।

श्रंखला में आयुर्वेद के उस समेकित स्वरूप की चर्चा की गयी जिसमें दिनचर्या, रात्रिचर्या, स्वास्थ्यवृत्त, मानसिक सद्वृत्त, चारित्रिक सद्वृत्त, सामाजिक सद्वृत्त,योग, ध्यान और प्राणायाम आदि शामिल रहे हैं। इस प्रकार रोग-विशेष पर ध्यान केन्द्रित कर उससे बचाव के लिये आयुर्वेदोक्त सलाह का विश्लेषण तो हुआ ही है, साथ ही आहार-विहार आदि के पृथक-पृथक घटकों को प्रस्तुत करते हुये उनके पालन से विविध रोगों से बचाव का समग्र विश्लेषण भी किया गया।

देश, काल और वातावरण की आवश्यकता के अनुरूप शहरी प्रदूषण जैसी कुछ विशेष समस्याओं का आँकलन करते हुये आयुर्वेदोक्त समाधन प्रस्तुत किया गया। उदाहरण के लिये वायु, जल, देश एवं काल के प्रदूषण के कारण होने वाले जनपदोध्वंस (सोसायटल कोलैप्स, कल्चरलकोलैप्स, एपिडेमिक्स) का बहुत गहन विश्लेषण हुआ। यह तमाम सामग्री ऐसी है जो हम अपने जीवन में प्रतिदिन उपयोग कर सकते हैं। जब एक व्यक्ति गलती करता है तो वह केवल स्वयं बीमार होता है, जब समाज प्रज्ञापराधी होता है तो सामाजिक-सांस्कृतिक, पारिस्थितिक और आर्थिक व्यवस्था चौपट हो जाती है, और जब शासन-व्यवस्था प्रज्ञापराधी होने लगती है तो जनपदोध्वंस होता है।

कठिन रोगों में 50 प्रतिशत डॉक्टर्स अपने मरीजों को आयुष दवाओं की सलाह देते हैं। कम से कम 63 प्रतिशत डॉक्टर्स यह मानते हैं कि आयुर्वेद और आयुष की दवायें प्रभावी हैं। और तो और, लगभग 50 प्रतिशत डॉक्टर्स स्वयं के जीवन के लिये आयुर्वेद और आयुष औषधियों का प्रयोग करते हैं।

वस्तुत: प्रत्येक अतिथि-संपादकीय में लेखन की उस विधि का प्रयोग हुआ है जो इस प्रकार के विश्लेषणों की सर्वमान्य तथा वैश्विक स्तर पर विद्वानों के मध्य स्वीकार्य विधि है। शास्त्र, साइंस और अनुभव के साथ कोई समझौता न करते हुये भी भाषा की सहजता का ध्यान रखा गया है। प्रत्येक सप्ताह सबसे पहले जनोपयोगी विषय का चयन किया जाता है। उस विषय पर आयुर्वेद के 5000 साल के इतिहास में उपलब्ध संस्कृत साहित्य का अनुशीलन, आयुर्वेद और औषधीय पौधों पर विश्व की सर्वाधिक प्रतिष्ठित शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित लगभग 2,50,000 शोधपत्रों के डेटाबेस में से संबंधित विषय पर प्रकाशित शोध का निचोड़ भी समाहित किया जाता है। संबंधित विषय पर अनुभवजन्य-ज्ञान को समाहित करते हुये प्रारंभिक मसौदा तैयार किया जाता है। इस मसौदे को देश के लगभग 5000 आयुर्वेदाचार्यों के मध्य सोशल मीडिया के माध्यम से रखकर समीक्षा, प्रतिक्रिया और विचार आमंत्रित किये जाते हैं। और अंतत: जितनी भी टिप्पणियाँ, सुझाव या फीडबैक मिलते हैं, उनको समाहित करते हुये एक समग्र-दृष्टिकोण युक्त आलेख अतिथि-संपादकीय के रूप में प्रकाशित होता है। आयुर्वेद जैसे तकनीकी और गूढ़ वैज्ञानिक विषय पर विश्लेषण तैयार करने की यही उत्तम विधि है।

मेरे लिये ज्ञान की यह व्यक्तिगत यात्रा अब व्यक्तिगत नहीं रही। बहुत लोग साथ हो चले हैं। ज्ञान का उत्पादन स्वान्त:सुखाय और समस्या-समाधान दोनों ही कारणों से हो सकता है। इन संक्षिप्त आलेखों का जनसामान्य, आयुर्वेदाचार्यों या अन्य स्टेकहोल्डर्स के मध्य प्रभाव को समझते हुये ही आगे बढ़ना ठीक रहता है। आयुर्वेद के विशाल जनोपयोगी भंडार की राष्ट्रदूत के माध्यम से लोगों तक पहुंच तो सुनिश्चित होती ही है, सोशल मीडिया के माध्यम से जानकारी की पहुंच का दायरा बहुत बढ़ गया है। अब प्रत्येक सप्ताह ये आलेख दो लाख से अधिक लोगों तक, जिनमें इलेक्ट्रॉनिक ग्रुप्स से जुड़े 50,000 आयुर्वेदाचार्य सम्मिलित हैं, पहुंचता है। द्वितीयक और तृतीयक सर्कुलेशन की गणना भी शामिल कर लें तो यह संख्या अब बहुत बड़ी हो गयी है।

विद्वानों के इन तमाम समूहों तथा अन्य सोशल-मीडिया से प्रत्येक सप्ताह उपयोगिता तथा महत्व पर प्राय: 2,000 तक टिप्पणियाँ दी जाती हैं। उपलब्ध जानकारी को कार्य से जोड़े जाने के निर्विवाद और ठोस प्रमाण भी लोग यहाँ अंकित करते हैं। आयुर्वेदाचार्यों के मध्य हाल ही में पुन: एक बार सर्वे किया गया जिसमें प्राप्त फीडबेक के आधार पर भी उपयोगिता सिद्ध होती है। वस्तुत:न केवल आयुर्वेदाचार्यो ने अपने कार्य में समय-समय पर इस जानकारी का उपयोग किया है, बल्कि आम आदमी ने आयुर्वेद को अपने जीवन का अंग बनाने में भी इस श्रृंखला का भरपूर उपयोग किया है।

इस समस्त चर्चा को यहाँ देने के पीछे आशय यह सन्देश देना है कि मानव जीवन में स्वास्थ्य के बराबर अन्य किसी संपत्ति का महत्व नहीं है। स्वास्थ्य जैसी सर्वोत्कृष्ट संपत्ति को बनाये रखने के लिये हमें न केवल आयुर्वेद के विविध आयामों को समझना उपयोगी है, बल्कि उस ज्ञान को कार्य से जोड़ कर जीवन में आत्मसात करना आवश्यक है। आयुर्वेद एक विस्तृत विज्ञान है और जीवन के विविध पहलुओं की समग्रता को इतने विस्तार से वर्णित करता है कि उसका कोई पारावार नहीं है।

आयुर्वेद की गुंजाइश सिर्फ मेरे या आपके लिये अब ढूँढ़ने की जरूरत नहीं बची, क्योंकि आयुर्वेद बीमार विश्व की जरूरत है। हाल में हुई शोध से पता चलता है कि दिल्ली के 95 प्रतिशत एम.बी.बी.एस. डॉक्टर्स को आयुर्वेद और आयुष का ज्ञान है, और 77 प्रतिशत डॉक्टर्स यह मानते हैं कि आयुष का ज्ञान होना लाभकारी है। कठिन रोगों में 50 प्रतिशत डॉक्टर्स अपने मरीजों को आयुष दवाओं की सलाह देते हैं। कम से कम 63 प्रतिशत डॉक्टर्स यह मानते हैं कि आयुर्वेद और आयुष की दवायें प्रभावी हैं। और तो और, लगभग50 प्रतिशत डॉक्टर्स स्वयं के जीवन के लिये आयुर्वेद और आयुष औषधियों का प्रयोग करते हैं।

एक बार पुन: यह बताना उचित होगा कि पत्रकारिता और विज्ञान के साझा सर्वोच्च वैश्विक मूल्यों और मानदंडों के अनुरूप यहाँ प्रस्तुत प्रमाण-आधारित सामग्री में आप निष्पक्षता, सत्यवादिता, पारदर्शिता, न्यायप्रियता, उत्तरदायित्व, प्रामाणिकता और स्पष्टोक्ति पायेंगे। परन्तु केवल ज्ञान की उपलब्धता स्वास्थ्य में सुधार नहीं ला सकती। इस जानकारी का उपयोग आप अपनी आयु को हितकारी एवं सुखकारी बनाने में करेंगे तभी लाभ है। ज्ञान को कार्य से जोड़ना और जीवन में आत्मसात करना आवश्यक है। आयुर्वेद पर जितनी अधिक चर्चा हो उतनी ही उपयोगी है। आयुर्वेद के जनोपयोगी विषयों की यह यात्रा जारी रहेगी। आयुर्वेद में ज्ञान तो बहुत उपलब्ध है पर भारतीय समाज ने इस ज्ञान को ऐसा भुलाया कि आज भारत अनेक रोगों की वैश्विक राजधानी बनता जा रहा है। यहाँ प्रस्तुत की गयी जानकारी इन समस्याओं से मुक्त रहने में निरंतर आपकी मदद करती रहे, यही कामना है।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फॉरेस्ट सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

कंटीले फूल

● **'करौली जिले में अवैध बजरी खनन पर संयुक्त कार्यवाही की जाये'।**

एकला दोकला के बस में तो ये अवैध बजरी माफिया हाथ में ही कौनी आवै, पिछला दिना एक सरपंच ने ही जिन्दगी से चलता कर दियो।

● **करौली में स्वच्छता मिशन की उड़ रही हैं धज्जियां।**

सर्वे हो गयो खत्म अब तो सरकारी कर्मचारी वापस से नींद लेबा लाग गया।

● **गंगापुर सिटी में पशु चिकित्सालय का विधायक ने किया लोकार्पण।**

मौका नहीं पड़ा नहीं तो मंत्री जी करते वो क्या है कि मंत्री जी विधान सभा में भूत की चर्चाओं के बाद इन दिनों धार्मिक नदी में स्नान करने गये हैं नहीं तो लोकार्पण करने वे ही आ जाते।

● **टोड़ाभीम में झोलाछाप चिकित्सक के विरुद्ध कार्रवाई।**

ये तो तालाब के पानी में काई की तरह जमे हुए हैं हटाने के बाद फिर से जम जाते है।

● **मासलपुर में ऑन लाइन प्रमाण पत्र बनवाने में हो रही है परेशानी।**

ऑन लाइन तकनीकी ने सुविधा की जगह असुविधा बढ़ा दी कभी कांस्टेबल परीक्षा में गड़बड़ी की जाती है तो कभी बैंक खाते से राशि उड़ाई जाती है।

दरगाह का जन्नती दरवाजा खुला, गरीब नवाज की मजार से उतरा संदल

अजमेर, (कासं)। सूफी संत ख्वाजा मोईनुद्दीन हसन चिश्ती के 806 वें सालाना उर्स के दौरान शनिवार देर रात्रि को ख्वाजा साहब के पवित्र मजार से संदल उतारने की रस्म खादिमों के द्वारा अदा की गई। इसके साथ ही रविवार तड़के दरगाह में धार्मिक दृष्टि से पवित्र माने जाने वाले जन्नती दरवाजे को भी आम जायरीन के लिए खोल दिया गया। जन्नती दरवाजा कुल की रस्म तक खुला रहेगा।

दरगाह खादिम सैयद कुतुबुद्दीन सकी ने बताया कि ख्वाजा साहब का छह दिवसीय उर्स चांद दिखाई देने पर विधिवत तौर पर रविवार या सोमवार से प्रारम्भ होगा। शनिवार रात्रि को आस्ताना शरीफ में रात्रि 8 बजे से खिदमत को खादिमों द्वारा अंजाम दिया गया। इस दौरान दरगाह के खादिम आस्ताना शरीफ में मौजूद पवित्र मजार शरीफ पर दिनभर चढ़ाए जाने वाले फूलों को निकालते हैं। इसके बाद ख्वाजा साहब के पवित्र मजार से संदल उतारने की रस्म प्रारंभ हुई, जिसमें दरगाह के खादिमों ने हिस्सा लिया।

अंजुमन यादगार के अध्यक्ष अब्दुल जर्रार चिश्ती व सचिव अब्दुल माजिद चिश्ती ने बताया कि संदल दरगाह के खादिमों के प्रत्येक सदस्य को वितरित किया गया। खादिमों द्वारा दरगाह में आने वाले प्रत्येक जायरीन को पवित्र संदल तर्बरुक के तौर पर देते हैं। इस संदल को लेकर मान्यता है कि इसे खाने से सभी तरह की बीमारियों से ख्वाजा साहब के करम से शिफा मिलती है। यही वजह है कि जो भी जायरीन जियारत के लिए अजमेर आता है। खादिम उसे तबर्रुक के साथ इस संदल को भी देते हैं।

ख्वाजा साहब के 806 वें सालाना उर्स के लिए रविवार तड़के दरगाह में स्थित जन्नती दरवाजा जायरीन के लिए खोल दिया गया। जन्नती दरवाजा छह रजब तक खुला रहेगा। जन्नती दरवाजा वर्ष भर में सिर्फ चार बार खोला जाता है। मान्यता है कि इस दरवाजे से सात बार गुजरने वाला जन्नत का हकदार हो जाता है।

उर्स का चांद आसमान में देखने के लिए दरगाह कमेटी के नाजिम कार्यालय में हिलाल कमेटी की बैठक आज होगी। कमेटी अजमेर के आस-पास चांद दिखाई देने की सूचना का सत्यापन करायेगी। दरगाह कमेटी के नाजिम आई. बी पीरजादा ने बताया कि अजमेर जिले व उसके आस-पास के क्षेत्रों में कोई भी बाशरा मुसलमान अगर चांद देखे तो दो आदमी आकर दरगाह कमेटी के कार्यालय में हिलाल कमेटी के समक्ष उपस्थित होकर चांद देखने की गवाही दें। पुष्टि होने पर हिलाल कमेटी चांद की दिखाई देने की घोषणा के साथ ही उर्स की औपचारिक शुरूआत हो जायेगी। गवाही देने आने वाले व्यक्तियों के आने-जाने व ठहरने का खर्च दरगाह कमेटी उपलब्ध करायेगी।

दरगाह में खादिम सैयद कुतुबुद्दीन सकी ने जायरीनों को संदल वितरण किया।

■ **पवित्र जन्नती दरवाजे को आम जायरीन के लिए खोल दिया**

19 को मंत्री नकवी पेश करेंगे पीएम की चादर, संदेश एलईडी पर सुनाया जाएगा

केन्द्रीय मंत्री मुख्तार अब्बास नकवी को पीएम नरेन्द्र मोदी ने ख्वाजा साहब को चढ़ाने वाली चादर सौंपी।

अजमेर, (कासं)। सूफी संत ख्वाजा मोईनुद्दीन हसन चिश्ती के 806 वें सालाना उर्स के मौके पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की ओर से 19 मार्च को केन्द्रीय अल्पसंख्यक मामलात मंत्री मुख्तार अब्बास नकवी ख्वाजा साहब की मजार पर चादर पेश करेंगे। शनिवार को दिल्ली में प्रधानमंत्री कार्यालय में आयोजित एक समारोह के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने सम्मान के साथ दरगाह में चढ़ाई जाने वाली चादर मुख्तार अब्बास नकवी को सौंपी।

पवित्र मजार पर पेश होने वाली इस चादर को नकवी खुद लेकर आएंगे। प्रधानमंत्री की ओर से ख्वाजा साहब के उर्स में चादर पेश करने की परंपरा चली आ रही है। इसके साथ ही प्रधानमंत्री की ओर से एक लिखित संदेश भी भेजे जाने की परम्परा है जो दरगाह के बुलंद दरवाजे से पढ़कर जायरीन को सुनाया जाता रहा है।

प्रधानमंत्री मोदी ने इस वर्ष संदेश नई तकनीक से बोलकर सुनाने की इच्छा व्यक्त की है। इसको लेकर अल्पसंख्यक मामलात मंत्रालय व स्थानीय प्रशासन तैयारियों में जुटा हुआ है। दरगाह के बाहर व कायड़ विश्राम स्थली पर एलईडी स्क्रीन के जरिये प्रधानमंत्री का संदेश सभी को सुनवाया जायेगा।

अमेरिका में रह रहे रघुवीर सिंघल ने बदला मोक्षधाम का स्वरूप

भुसावर, (निसं)। हाल अमेरिका निवासी भामाशाह रघुवीर सिंघल अपने पैतृक गांव रणधीरगढ़ के मोक्षधाम की वर्तमान में रूपरेखा बदलने में लगे हुए हैं। जिन्होंने वर्तमान में करीब 5 लाख रुपये से अपने माता-पिता की याद में एक बरामदे का निर्माण करवाकर ऊबड़ खाबड़ हो रही जमीन को समतल करवाया। गांव रणधीरगढ़ निवासी टीकमचन्द सिंघल ने बताया कि वे अमेरिका में इंजीनियर हैं।

भामाशाह रघुवीर सिंहल ने भुसावर-महवा सड़क मार्ग स्थित गांव रणधीरगढ़ के मोक्षधाम में आने वाले लोगों को धूप में तपते देखा व परेशानियों के साथ क्रिया-कर्म करते देखा तो उन्होंने अपने माता-पिता की स्मृति में एक बरामदे का निर्माण करवाते हुए जमीन को समतल करवाकर मोक्षधाम की रूपरेखा बदल दी। वर्तमान में 3.65 लाख रुपये की लागत से एक बरामदा और 1.50 लाख रुपये की लागत से समतलीकरण का कार्य चल रहा है।

वहीं भामाशाह रघुवीर सिंघल ने दूरभाष के जरिये बताया कि गांव में विकास कार्यों के लिए कभी भी मेरे द्वारा पीछे नहीं हटा जायेगा। मोक्षधाम को एक पार्क का रूप दिया जायेगा जिसमें चारदीवारी के बाद पेड़ पौधे लगाकर सौन्दर्यकरण करते हुए सड़क निर्माण के बाद पार्क का रूप दिया जायेगा। मोक्षधाम में पानी के लिए सम्पूर्ण व्यवस्था कर मुख्य द्वार का निर्माण कराया जायेगा।

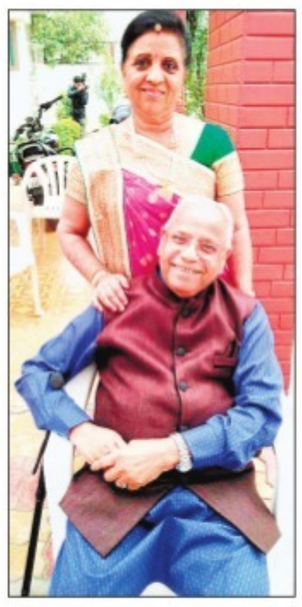

भामाशाह रघुवीर सिंघल

ज़नवाणी

हँसी में फंसी सरकार

रेणुका चौधरी की हंसी, बीजेपी सरकार फंसी।
रामायण में हंसी सुनी, अब रेणुकाजी से सुनी।
अब वीडियो खूब आने लगे–
सुरपण खां के हंसी का वीडियो,
कुंभकरण के हंसी का अट्टहास,
शौले में गब्बर की हंसी, बेचारी सरकार फंसी।
पी.एम. मोदी अब इस्तीफा दें,
हंसी पर माफी मांगे।
अब हंसना मना है दोस्तों,
रामायण के बाद हंसी हंसो...
संसद की गरिमा भी रखो।
हंसने वाले रहम करो,
हंसी में पीएम को बरी करो।

–इन्दरचन्द बैद 'कवि', नोखा (राज.)

कार्टूनी नज़रिया

हिन्दू से साभार

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

रविवार 18 मार्च, 2018

चैत्र मास, शुक्ल पक्ष, प्रतिपदा तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2074, उत्तराभाद्रपद नक्षत्र, शुक्ल योग, बव करण, चन्द्रमा आज मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मीन, चन्द्रमा-मीन, मंगल-धनु, बुध-मीन, गुरू-तुला, शुक्र-मीन, शनि-धनु, राहु-कर्क, केतु-मकर राशि में।

आज उत्तराभाद्रपद नक्षत्र रात्रि 8:10 तक, शुक्ल योग सायं 7:19 तक है। इसके पश्चात रेवती नक्षत्र, ब्रह्म योग, बालव करण आरम्भ होगा। आज सर्वार्थसिद्धि योग सूर्योदय से रात 8:10 तक है। राजयोग सायं 6:30 से रात्रि 8:10 तक है। महापात योग रात्रि 8:05 से रात्रि 1:15 तक है। आज से चान्द्र संवत्सर आरम्भ होगा। आज से चैत्र शुक्लादि बसन्त नवरात्र आरम्भ होंगे। आज चन्द्र दर्शन, उत्तर श्रृंगोन्नति, चेटीचण्ड, श्रीझूलेलाल जयन्ती है और श्री गौतम जयन्ती, पंचक है। आज घट स्थापना सूर्योदय से प्रात: 7:56 तक मुहर्त सर्वश्रेष्ठ रहेगा। इसके अलावा अभिजित मुहर्त दिन 12:11 से 12:59 तक है और चौघडिया के अनुसार घट स्थापना दिन 8:07 से 12:35 तक चर, लाभ अमृत के चौघडिये में शुभ रहेगी।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 8:07 से 9:36 तक, लाभ-अमृत 9:36 से 12:35 तक, शुभ 2:05 से 3:34 तक।

राहुकाल: 12:00 से 1:30 तक।

मेष
घर-गृहस्थी के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है।

वृष
घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त हो सकता है। आज धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

मिथुन
अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक और रचनात्मक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा।

कर्क
धार्मिक/मांगलिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। व्यावसायिक परेशानियां दूर होने लगेगी। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

सिंह
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। धार्मिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी।

कन्या
परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आपसी सहयोग से महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक कार्यों में आस्था बढ़ेगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

तुला
स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित विवादों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

वृश्चिक
धार्मिक-सामाजिक समारोह में भाग लेने का अवसर मिलेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। शुभ कार्यों पर धन खर्च हो सकता है।

धनु
घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अतिथियों के आगमन के कारण दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। स्वास्थ्य संबंधित परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

मकर
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक संदेश प्राप्त होंगे। परिचितों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। धार्मिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा।

कुंभ
धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। धार्मिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। घर-परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा।

मीन
अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। मन:स्थिति में सुधार होगा। धार्मिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।